سُورَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ

सूरह फ़लक़ मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ (1)

कहो: मैं शरण (पनाह) मांगता हूँ, प्रभात (सुबह) के पालनहार (मालिक) की।

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ (2)

(हर उस चीज़ की) बुराई से, जो उसने रची है।

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ (3)

और अंधेरी (रात्रि) की बुराई से, जब वह (उसका अंधकार) छा जाए।

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۙ (4)

और गाँठों में फूँक मारने वाली (स्त्रियों) की बुराई से।

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۧ (5)

और ईर्ष्या करने वाले की बुराई से, जब (वह) ईर्ष्या करे।